Emerging Trends in Education [Vol. 3 - No. 2. pp 56-61]

शिक्षा के प्रभावशाली सम्प्रेषण की अनिवार्यता

नीलिमा सिंह*

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, इसकी अपनी सभ्यता एवं संस्कृति है। मानव की सभ्यता का विकास सम्प्रेषण के विकास का ही परिणाम है। सभी प्रकार के मानवीय सम्बन्ध संचार पर आधारित होते हैं। मानव समूह के सदस्यों के लिए आवश्यक होता है कि वह आपस में विचारों का आदान–प्रदान करें। इतना ही नहीं जब एक समूह दूसरे समूह को प्रभावित करना चाहता है तो वह संचार को ही अपनाता है। संचार सामाजिक एकता एवं सामाजिक संगठन की निरन्तरता का आधार है। सम्प्रेषण वह प्रक्रिया है जिसमें एक सामाजिक प्रणाली के माध्यम से सूचनाओं, सम्मतियों तथा अभिवृत्तियों को बनाया या सुधारा जा सकता है।

कई बार देखा जाता है कि कुछ शिक्षक उच्च शैक्षिक योग्यता रखने के उपरान्त भी अपने शिक्षार्थियों को सन्तुष्ट नहीं कर पाते जबकि कुछ अन्य शिक्षक, अधिक शैक्षिक योग्यता न होते हुए भी अपने शिक्षार्थियों को पूर्णतः सन्तुष्ट करने में सफल रहते हैं। क्या सभी शिक्षकों में यह सम्प्रेषण प्रभावशाली नहीं हो सकता? माना कि व्यक्ति में कुछ कौशल जन्मजात होते हैं परन्तु कुछ अभ्यास से अर्जित किए जा सकते है। सम्प्रेषण एक ऐसा ही कौशल है जिसे अभ्यास से प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

'प्रेषण' का अर्थ है प्रेषित करना, अर्थात् किसी वस्तु या विचार को एक जगह से दूसरी जगह भेजना। प्रेषण एक पक्षीय व्यवहार है जबकि 'सम्प्रेषण' का अर्थ व्यापकतायुक्त है। सम्प्रेषण एक पक्षीय व्यवहार न होकर द्वि–पक्षीय व्यवहार होता है, अर्थात् इसमें विचारों का द्वि–पक्षीय या बहुपक्षीय आदान–प्रदान होता है। अंग्रेजी भाषा के 'कम्युनिकेशन' शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्द 'कम्यूनिस' से हुई है जिसका अर्थ है– परस्पर बाँटना, देना और लेना तथा मैत्री–भाव। दोनों भाषाओं की शब्द रचना को देखकर यही कहा जा सकता है कि सम्प्रेषण के द्वारा हम अपने ज्ञान, सूचनाओं, विचारों, धारणाओं, अनुभवों, भावनाओं का इस प्रकार परस्पर आदान–प्रदान कर सकते हैं, जिससे उनके उपयोग एवं अर्थ को भली–भाँति समझा जा सके।

शिक्षा मुख्यतः सम्प्रेषण का विषय है। शिक्षकों के लिए यह जानना अनिवार्य है कि वे अपनी बात प्रभावपूर्ण ढंग से शिक्षार्थियों तक कैसे पहुँचायें। पाठ्यवस्तु को अपने शिक्षार्थियों तक समुचित रूप से प्रेषित कर उनके व्यवहार में वांछित परिवर्तन किस प्रकार लाएँ?उसके लिए प्रभावशाली सम्प्रेषण का महत्व निर्विवाद है। सम्प्रेषण कोई नई संकल्पना नहीं है। प्राचीन काल में भी विभिन्न प्रकार के सूत्र, व्याख्या, भाष्य, वार्तालाप आदि शैलियां विभिन्न आयु–वर्ग व शिक्षित वर्ग के सम्प्रेषण का माध्यम थीं। शिक्षक से दो बातों की सबसे अधिक अपेक्षा की जाती रही है – ज्ञान तथा उस ज्ञान को शिक्षार्थी तक भेजने की क्षमता। "किसी शिक्षक के पास ज्ञान

* असिस्टेण्ट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, उदय प्रताप स्वायत्तशासी कालेज, वाराणसी।

बहुत है तथा किसी के पास ज्ञान को शिक्षार्थी तक सम्प्रेषण की कला, परन्तु सर्वश्रेष्ठ शिक्षक वही है जिसके पास ज्ञान और सम्प्रेषण कला दोनों है''– (कालीदास)

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया तभी सफल मानी जा सकती है जब शिक्षक का सम्प्रेषण प्रभावशाली हो। इसके लिए उसे अपने सम्प्रेषण को प्रभावशाली बनाने वाले कुछ तत्वों का ध्यान रखना होगा। शिक्षक तथा शिक्षार्थी के मध्य प्रभावशाली सम्प्रेषण में वातावरण शान्त हो, दोनों अभिप्रेरणा युक्त हों तथा एक–दूसरे के प्रति अभिमुख हों। शिक्षक स्तरानुरूप शुद्ध भाषा का प्रयोग करे तथा दोनों की भाषा भी समान हो। शिक्षक की संकेतात्मक अभिव्यक्ति में गुणवत्ता हो। उसके चेहरे की अभिव्यक्ति भावों के अनुरूप हो। उसका अपने प्रति, शिक्षार्थियों के प्रति व विषय के प्रति समुचित दृष्टिकोण हो। उसकी अपने शिक्षार्थियों के प्रति तद्नुभूति अथवा समानानुभूति हो। दोनों में परस्पर विश्वास का भाव हो। वह शिक्षार्थियों की मानसिक स्थिति को समझे तथा उसके अनुरूप सम्प्रेषण में प्रवृत्त हो। शिक्षक को शिक्षार्थियों की आयु, लिंग व सामाजिक परिवेश आदि का ध्यान रखकर ही सम्प्रेषण करना चाहिए। वह शिक्षार्थियों की इच्छा, सुनने की क्षमता, प्रतिक्रिया आदि को ध्यान में रखकर ही सम्प्रेषण में प्रवृत्त हो।

सम्प्रेषण एक संगठन में व्यक्तियों और समूह के लिए एक गतिशील माध्यम है। इस प्रक्रिया में सम्प्रेषण विचारों, मतों, तथ्यों एवं भावनाओं को दूसरे तक सम्प्रेषित करने के लिए एक विभिन्न प्रकार के संचार माध्यमों का प्रयोग करता है। यह माध्यम लिखित, मौखिक, दृश्य–श्रव्य हो सकते हैं। दृश्य संचार माध्यम में स्लाइड्स, नियोन होर्डिंग्स, पोस्टर आदि सम्मिलित होते हैं। टेलीविजन तथा फिल्में श्रव्य–दृश्य सम्प्रेषण का माध्यम है। संगठन का लक्ष्य विभिन्न संचार माध्यमों की प्रक्रिया द्वारा प्राप्त किया जाता है। उसे सक्रिय बनाया जाता है। सम्प्रेषक कब और क्या सम्प्रेषित करना चाहता है, इसका चयन करता है और सम्प्रेषण के लिए उनके माध्यम निर्धारित करता है। संग्राहक संदेश ग्रहण करता है, विश्लेषण करता है, बोध करता है और उसका प्रत्युत्तर देता है। यह सम्पूर्ण क्रम संचार प्रक्रिया है। प्रक्रिया के रूप में यह नित्य घटित होता है और निरन्तर जारी रहता है।

सम्प्रेषण मानव की प्राचीनतम गतिविधि है। यह वह प्रक्रिया है जिससे सन्देश प्रेषक तथा संदेश प्राप्तकर्ता दोनों एक दूसरे को भली–भाँति समझ सकते हैं तथा संतुष्ट हो सकते हैं। सम्प्रेषण की प्रक्रिया को इस प्रकार समझा जा सकता है–

सम्प्रेषण स्रोत : जिस व्यक्ति से विचारों के आदान–प्रदान की शुरूआत की जाती है, अर्थात् जो व्यक्ति अपने विचारों को दूसरे तक पहुँचाता है 'सम्प्रेषण स्रोत' कहलाता है।

सम्प्रेषण सामग्री : वह विचार व संदेश जिसे प्रेषित किया जाता है 'सम्प्रेषण सामग्री' कहलाती है।

सम्प्रेषण माध्यम : जिनकी सहायता से संदेश स्रोत के प्राप्तकर्ता तक पहुँचता है वे 'सम्प्रेषण माध्यम' कहलाते हैं। ये माध्यम शाब्दिक, अशाब्दिक, मौखिक–लिखित आदि कई प्रकार के हो सकते हैं। विभिन्न प्रकार की दृश्य सामग्री, शिक्षण विधियों, शिक्षण रणनीतियों को भी सम्प्रेषण

माध्यम बनाया जा सकता है।

सन्देश प्राप्तकर्ता : स्रोत द्वारा प्रेषित सन्देश को ग्रहण करने वाला 'सन्देश प्राप्तकर्ता' कहलाता है। इसका भी उतना ही महत्व है जितना सम्प्रेषण स्रोत का। इसके बिना सारी प्रक्रिया व्यर्थ होती है।

अनुक्रिया : स्रोत द्वारा भेजे गये संदेश पर प्राप्तकर्ता की क्या प्रतिक्रिया रही?यही प्रतिक्रिया 'अनुक्रिया' कहलाती है। इसे स्रोत तक पहुँचाने की भूमिका प्राप्तकर्ता द्वारा निभाई जाती है। सम्प्रेषण जारी रहे या नहीं, यह इसी प्रतिक्रिया पर निर्भर करता है।
शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक एक स्रोत के रूप में कार्य करते हैं क्योंकि वे शिक्षार्थियों तक संदेश पहुँचाते हैं। पढ़ाया जाने वाला पाठ, विषयवस्तु तथ्य तथा सूचनाएं सम्प्रेषण सामग्री होती हैं। शिक्षक द्वारा अपनायी गई शिक्षण विधियाँ, शिक्षण रणनीतियाँ, सहायक सामग्री, भाषा आदि माध्यम होते हैं। शिक्षार्थी प्राप्तकर्ता के रूप में कार्य करते हैं, क्योंकि उन्हें सूचना प्राप्त करनी होती है। शिक्षार्थियों से प्राप्त अनुक्रिया से ही यह ज्ञात होता है कि सम्प्रेषण कितना सफल रहा।

एक शिक्षक, शिक्षार्थी, शिक्षण के द्वारा किया गया सम्प्रेषण एवं सम्प्रेषण माध्यम तथा शिक्षार्थियों की अनुक्रिया शिक्षण में सम्प्रेषण के मुख्य तत्व हैं। शिक्षक को इन सभी तत्वों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

शाब्दिक सम्प्रेषण : जिसमें भाषा के लिखित व मौखिक दोनों रूपों का प्रयोग हो, सम्प्रेषण का शाब्दिक प्रकार कहलाता है। इसमें स्रोत और प्राप्तकर्ता दोनों द्वारा उसी भाषा का प्रयोग हो जिसे वे समझते हों।

अशाब्दिक सम्प्रेषण : एक–दूसरे की भाषा न जानने वाले, गूंगे, बहरे आदि इसी का प्रयोग करते हैं। सम्प्रेषण को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए अशाब्दिक सम्प्रेषण का प्रयोग किया जाता है। इसके कई रूप होते हैं–

- **मुख मुद्रा** – शिक्षक की मुस्कुराहट शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को रूचिकर बना सकती है। घृणा, विस्मय, चिन्ता, विषाद, प्यार जताना आदि भी सम्प्रेषण के माध्यम हैं। शिक्षक के चेहरे की अभिव्यक्ति शिक्षार्थियों को कक्षा में सावधान रहने के लिए प्रेरित करती है।

- **आंखों की भाषा** – आंखें दिखाना, आंखे ऊंची न होना, आंख निकालना, आंखे तरेरना, आंखे भारी होना, आंखों के आंसू झलक आना आदि आंखों के माध्यम से भी सम्प्रेषण किया जा सकता हैं।

- **शारीरिक भाषा** – अंग संचालन, मूक अभिनय, नृत्य द्वारा भावों की अभिव्यक्ति, दाँत पीसना, रोंगटे खड़े होना, चरण स्पर्श करना, अंग–अंग खिल उठना, हाथ जोड़ना, कान पकड़ना, गरदन झुकाना, गला भर आना, छाती पीटना, जुबान बंद होना, गर्दन हिलाना, पीठ थपथपना आदि विभिन्न शारीरिक अंगों के माध्यम से सम्प्रेषण की संवेगात्मक अनुभूति शिक्षार्थियों में उपलब्धि के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न कर सकती है।

- **ध्वनि संकेत** – हूं, ऊंहू, सीटी बजाना, गुनगुनाना, घंटी बजाना आदि ध्वनि संकेत भी सम्प्रेषण की भूमिका निभाते हैं।

अच्छा शिक्षण मात्र सम्प्रेषण नहीं है, अपितु उससे अधिक है। बालक सम्प्रेपित किये गये शब्द को उसी प्रकार दोहराएगा, यह पर्याप्त नहीं है। शिक्षक का प्रयोग यह है कि बालक उस शब्द को पहचाने, उसका अर्थ समझे और भावी परिस्थितियों में उसका प्रयोग सही रूप में कर सके। वास्तविक अधिगम केवल तभी घटित होता है जब सम्प्रेषण का कार्य विद्यार्थी के सम्प्रेषण कौशलों में सार्थक तथा स्थायी अभिवृद्धि करने में सफल हुआ हो। कक्षा में सम्प्रेषण केवल मात्र तथ्यों का एकतरफा प्रस्तुतीकरण नहीं है। इसके लिए छात्र तथा शिक्षक के बीच अन्तःसम्प्रेषण की आवश्यकता होती है। पाठशाला का मूलभूत प्रयोजन बालकों में सम्पूर्ण कौशलों का विकास करना है। अतः शिक्षक को इन कौशलों को विकसित तथा परिष्कृत करने की विधियाँ और साधन उपलब्ध कराने चाहिए। शिक्षक को छात्र के ऊपर कक्षा से बाहर अनेक सम्प्रेषण माध्यमों के निरन्तर पड़ने वाले प्रभाव को महसूस करना चाहिए।

सम्प्रेषण वास्तव में वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से किसी व्यक्ति की भावनाएँ, विचार प्रवाह तथा संचार प्रक्रिया किसी भी दूसरे व्यक्ति तक सरलता से पहुँचायी जा सकती है। किसी भी व्यक्ति तक अपने विचारों को पहुँचाने के लिए चित्रकला, संगीत, ग्राफिक्स भी सरल एवं अच्छे माध्यम हैं। एक शिक्षक के लिए सम्प्रेषण की आवश्यकता क्यों है?अध्यापक यदि सम्प्रेषण तकनीकी का प्रयोग करने में कुशल है तो वह कक्षा–कक्ष की परिस्थितियों को सहजता से सम्भाल लेता है तथा छात्रों के समक्ष अपनी अच्छी छवि प्रस्तुत करता है। अध्यापक की कुशलता इस बात पर भी निर्भर है कि वह सम्प्रेषण अन्तराल को न्यून स्तर पर लाये जिसमें अधिगम अधिकाधिक हो सके। सम्प्रेषण अंतराल द्वारा संकोचन को दूर किया जाता है, जैसे–आकाशवाणी या दूरदर्शन में विद्यालयी क्रियाकलापों के कार्य विवरण का प्रसारण करना, अध्यापक–अभिभावक सभा का आयोजन करना, वैयक्तिक स्तर पर सूचनाओं का सम्प्रेषण करना, भौतिक संवाद तथा मुद्रित अध्ययन आदि का उपयोग करना, परामर्श व जनसम्पर्क कार्यक्रम का आयोजन करना आदि।

वास्तव में यदि देखा जाय तो एक सशक्त अध्यापक वही है जिसके अन्दर निर्णय लेना (Decision Making), व्यवसायिक वृद्धि (Professional Growth); शिक्षक स्तर (Teacher Status), आत्म सामर्थ्य (Self-Efficacy); स्वशासन (Autonomy) तथा शिक्षक प्रभाव (Teacher impact) जैसे तत्व विद्यमान हैं, जिसके बल पर वह कक्षा–कक्ष तथा वाह्य परिस्थितियों पर नियंत्रण कर सकता है। शिक्षक की गुणवत्ता में मूल्यों की भी महती भूमिका है, नैतिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, पर्यावरणीय मूल्य तथा चारित्रिक मूल्य बहुत महत्व रखते हैं। इसके अतिरिक्त राष्ट्रभक्ति, सर्वधर्म समभाव, स्त्री–पुरूष समानता संवेदनशीलता एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी महत्वपूर्ण मूल्य हैं।

शिक्षक क्रिया में गुणवत्ता लाने हेतु कुछ आवश्यक बिन्दु :

- अध्यापक की व्यक्तिगत भूमिका में परिवर्तन

- प्रशिक्षण कार्यक्रमों को संगठित करना।
- प्रशिक्षण का एकीकरण करना।
- प्रशिक्षकों को भी प्रशिक्षित करना।
- अध्यापक को कार्य की स्वतंत्रता प्रदान करना।
- निष्ठावान एवं कर्तव्य परायण शिक्षकों को सम्मानित करना।

वर्तमान युग में नयी तकनीक शैक्षणिक व्यवस्था का अनिवार्य और आकर्षक तत्व है। शिक्षक, शिक्षा को विस्तार के योग्य तथा सुधार हेतु तकनीक का प्रयोग वांछनीय है। **माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार–** "हमें पूर्ण विश्वास है कि इस अपेक्षित शिक्षा पुनर्निर्माण में अध्यापक का स्थान उसके व्यक्तिगत गुण, शैक्षिक योग्यता तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण पर है। विद्यालय की प्रसिद्धि और समाज पर इसका प्रभाव कार्य करने वाले अध्यापकों पर ही निर्भर करता है।" किसी देश की शिक्षा–प्रणाली अपने शिक्षकों के माध्यम से ही सुदृढ़ हो सकती है, जबकि शैक्षिक योजना की यह एक स्वयं सिद्धि है कि अच्छी शिक्षा आदर्श अध्यापक पर ही निर्भर करती है और अध्यापक की अच्छाई शिक्षक–शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर है लेकिन वह प्रभावहीन सिद्ध हो रही है। यदि ऐसे जागरूक तथा सक्षम प्रशिक्षक नहीं हों जो अपने भावी अध्यापकों एवं छात्राध्यापकों में क्षमता, प्रतिबद्धता एवं कार्य निपुणता के अपेक्षित गुणों का समावेश कर पाये तो निश्चित ही शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता का ह्रास होगा।

शिक्षक को कलाकार या जादूगर कहा जाता है। इसका अर्थ उसके अन्दर सम्प्रेषण कला एवं अभिव्यक्ति का ऐसा जादू है, जो छात्रों को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। इस कला को सशक्त करने के लिए अध्यापकों को निम्नांकित कुछ बातों पर ध्यान देना चाहिए:

- सरल, सुगम, बोधगम्य तथा स्पष्ट भाषा का प्रयोग करना चाहिए।
- सम्प्रेषण में विपरीत प्रभाव डालने वाले सामाजिक व मनोवैज्ञानिक कारणों का समाधान करना चाहिए।
- भावुक, गम्भीर, जटिल तथा दार्शनिक अंदाज में वक्तव्य देने से बचना चाहिए।
- सम्प्रेषण में कम शब्द तथा छोटे वाक्यों का प्रयोग करना चाहिए।
- भाषण में व्याकरण का ध्यान रखना चाहिए।
- वक्तव्य के समय अंगों का संचालन हाव–भाव तथा संकेत को स्पष्ट करना चाहिए।
- संदेह, भ्रम तथा भय की स्थिति में सम्प्रेषण नहीं करना चाहिए।
- अनावश्यक उदाहरण कल्पना एवं मिथक के प्रयोग से बचना चाहिए।
- संक्षिप्त एवं सारगर्भित सम्प्रेषण करना चाहिए।

शिक्षक–शिक्षा के स्वरूप, इसके उद्देश्यों में तथा अध्ययन की विधियों में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। प्रशिक्षण द्वारा हमें शिक्षकों को उस स्थिति का सामना करने योग्य

बनाना होगा जिससे वे अपने छात्रों को नवीन समाज से सामन्जस्य स्थापित करना सिखाएं। शिक्षकों में ऐसे रचनात्मक कार्यों को करने की प्रेरणा देनी होगी जिससे वे भविष्य का अन्वेषण कर सकें तथा छात्रों में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर सकें, तार्किक आधार पर पुराने विचारों का बहिष्कार तथा नवीन विचारों की स्थापना कर सकें। शिक्षक–शिक्षा में प्रबन्धन, सामाजिक अभियान्त्रिकी, नैतिक एवं मूल्यपरक शिक्षा जैसे नवीन विचारों को सम्मिलित किया जाना चाहिए।

सार रूप में यह कहा जा सकता है कि अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता लाने हेतु सरकारी संस्थाओं को कर्तव्य परायणता से कार्य करना होगा तथा शिक्षकों के समक्ष आदर्श प्रस्तुत करना होगा। शिक्षक की गुणवत्ता में सुधार की सम्भावना तभी देखी जा सकेगी जब उच्च पदों पर आसीन अधिकारीगण उस स्थिति में हों। छात्र तो सबसे निचली इकाई है दोनों के सुधारोपरान्त वह स्वयं सुधर जायेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थः

- अग्रवाल, जे.सी. (1995): टीचर एण्ड एजुकेशन इन डेवलेपिंग सोसाइटी, विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड।
- अग्रवाल, जे.सी. (2008): एसेन्शियल्स ऑफ एजुकेशनल टेक्नालाजी : इन्नोवेशन्स इन टीचिंग लर्निंग, विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड।
- अग्रवाल, जे.सी. (2008): शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबन्ध, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
- कुलश्रेष्ठ, एस.पी. (2009): शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा–2
- भट्टाचार्य, जी.सी. (2003): अध्यापक शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- सक्सेना, एन.आर., मिश्रा, बी.के. एवं मोहन्ती, आर.के. (1999): अध्यापक शिक्षा आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।